सम्पूर्णता वर्ष

तीव्र पुरुषार्थी सप्ताह

30.03.2014

1. **स्वमान** – मैं तीव्र पुरुषार्थी हूँ।

तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् –

- **सदा मास्टर दाता**, लेवता नहीं देवता, देने वाला। यह हो तो मेरा पुरुषार्थ हो, यह करे तो मैं भी करूँ, यह बदले तो मैं भी बदलूँ...नहीं...तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् कोई करे ना करे, लेकिन मैं बापदादा की आशाओं को पूर्ण करूँ।
- **निर्माण और निर्मान दोनों का बैलेन्स रखने वाला**। निर्माण कार्य (सेवा) करते भी निर्मान...

2. **योगाभ्यास** –

अ. बाबा ने कहा है कि तीव्र पुरुषार्थी माना सेकण्ड में बिंदी लगाने वाले...तो इस बार हम सब बार-बार तीन बिंदी लगाने का अभ्यास करेंगे...।

ब. इस बार योगाभ्यास में हम उस दृश्य को कई बार इमर्ज करेंगे जब कुछ वर्ष पूर्व बाबा ने हमें शांतिवन के डायमण्ड हॉल में मिलते हुए कहा था कि बच्चे, तीव्र पुरुषार्थी बनने की सौगात बापदादा आप सभी बच्चों को दे रहे हैं और आज से जब भी कोई आपसे पूछे कि आप कौन हो तो बोलो - **'मैं तीव्र पुरुषार्थी हूँ।'**

स. इस बार हम ब्रह्मा बाबा को कभी अपने सामने देखते हुए, कभी उन्हें अपने नयनों में समाकर तो कभी वतन में उनके पास जाकर उनसे तीव्र पुरुषार्थ की टिप्स लेंगे...उनसे रुहरिहान करेंगे कि बाबा आपने कैसे तीव्र पुरुषार्थ किया...? हमारे पुरुषार्थ में भी वैसी तीव्रता कैसे आये...आदि??

3. **धारणा – मेरो तो शिव बाबा एक, दूसरो ना कोई**...

– एक की लग्न में मग्न आत्मा ही तीव्र पुरुषार्थी है। तो एकव्रता-पतिव्रता-पिताव्रता बनें।

4. **स्वचिंतन** –

- तीव्र पुरुषार्थ अर्थात् क्या?
- कौन सी बातें मेरे पुरुषार्थ में विघ्न रुप बन रही हैं? मुझे तीव्र पुरुषार्थ नहीं करने दे रही हैं?
- तीव्र पुरुषार्थी बनने के लिये मुझे क्या करना होगा?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! देखते ही देखते एक और सीजन पूरा हो गया। प्यारे बापदादा ने तीव्र पुरुषार्थ की प्रेरणा देते हुए हम सबसे विदाई ली। दिल तो नहीं चाहता था कि बाबा की सीजन पूरी हो और बापदादा हमसे विदाई लें लेकिन...परमात्म-योजना के अनुसार सारा खेल चल रहा है। हमें अपने मात-पिता बापदादा के सूक्ष्म ईशारे को समझते हुए अपने पुरुषार्थ में अब तीव्रता लाना है। यही समय की पुकार है। आप सब देख ही रहे हैं कि समय कैसे पंख लगाकर उड़ता जा रहा है। शायद इसीलिये बाबा ने कहा - ``अभी समय की रफ्तार तीव्र गति से जा रही है इसलिए सभी बच्चों को अभी सिर्फ पुरुषार्थी नहीं बनना है लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बन पुरुषार्थ की प्रालब्ध का बहुतकाल से अनुभव करना है।``